ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 22 कुल पृष्ठ-8 28 फरवरी से 6 मार्च, 2019 दयानन्दाब्द 195 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 फा.कृ.-12

मगध प्रमण्डलीय आर्य सभा एवं आर्य समाज मानपुर (गया) बिहार के संयुक्त तत्वावधान में दक्षिण बिहार आर्य महासम्मेलन भव्यता के साथ सम्पन्न

समाज में फैले अन्धविश्वास एवं पाखण्ड को मिटाना अत्यन्त आवश्यक

– स्वामी आर्यवेश

बिहार में आर्य समाज को तेजस्वी बनाने के लिए संगठन को मजबूत बनाना नितान्त आवश्यक है

– रामेन्द्र गुप्ता

बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में पाखण्ड के विरुद्ध जन चेतना यात्राएँ निकाली जायेंगी

– संजय सत्यार्थी

आर्य समाज मानपुर (गया), बिहार में गत 24 से 27 फरवरी, 2019 तक मगध प्रमण्डलीय आर्य सभा एवं आर्य समाज मानपुर के संयुक्त तत्वावधान में दक्षिण बिहार आर्य महासम्मेलन एवं 51 कुण्डीय महायज्ञ शानदार तरीके से आयोजित किया गया। महासम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री रामेन्द्र गुप्ता, कोषाध्यक्ष श्री जयदेव कुमार आर्य, श्री रामानन्द आर्य उपप्रधान, श्री राम नारायण शास्त्री प्रधान जिला सभा समस्तीपुर, श्री प्रेम कुमार आर्य मंत्री आर्य समाज मुगलपुरा, आचार्य सदानन्द शास्त्री सीतामढ़ी, श्री अरविन्द प्रसाद प्राचार्य डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल मानपुर, बहन अमृता आर्या नई दिल्ली एवं श्री श्यामानन्द आर्य भागलपुर आदि नेता, विद्वान एवं उपदेशकों ने विभिन्न सम्मेलनों को सम्बोधित किया। इस पूरे आयोजन की अध्यक्षता डॉ. बच्चू लाल आर्य ने की तथा उनके साथ मगध प्रमण्डलीय आर्य सभा के मंत्री श्री राम प्यारे प्रसाद, कोषाध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार आर्य, संरक्षक श्री हरिदेव प्रसाद आदि ने विशेष भूमिका निभाई। महासम्मेलन का संयोजन एवं यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री आचार्य संजय सत्यार्थी का कार्यक्रम की सफलता में विशेष योगदान रहा। 24 फरवरी को प्रातः यज्ञ के द्वारा कार्यक्रम विधिवत रूप से प्रारम्भ हुआ जिसमें श्री पी.के. मोहन व उनकी धर्मपत्नी दुर्गेश नन्दिनी तथा डॉ. अशोक कुमार आर्य व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुषमा आर्या यजमान बने। यज्ञ श्री संजय सत्यार्थी ने संपादित किया तथा यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी का सारगर्भित उपदेश हुआ। स्वामी जी ने यज्ञ की महिमा की विस्तार से व्याख्या करते हुए बताया कि यज्ञ करना जीवन में बहुत जरूरी है क्योंकि यज्ञ से मनुष्य में निष्काम भाव उत्पन्न होता है और निष्काम भाव से स्वयं को परोपकार में लगा देने से व्यक्ति का स्वयं तथा पूरे समाज व राष्ट्र का कल्याण होता है। दिन में शोभा यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें आर्यजनों ने उत्साह से भाग लेकर महर्षि दयानन्द की जय के नारे पाखण्ड के लिए प्रसिद्ध गया की भूमि पर गुंजाये। सायंकालीन सत्र में पटना से सभा मंत्री श्री रामेन्द्र गुप्ता, कोषाध्यक्ष श्री जयदेव कुमार आर्य एवं उपप्रधान श्री रामानन्द आर्य दलबल के साथ महासम्मेलन में पधारे।

श्री रामेन्द्र गुप्ता जी के कर–कमलों से महासम्मेलन का विधिवत दीप प्रज्ज्वलित करके उद्घाटन किया गया। उन्होंने इस अवसर पर अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि बिहार राज्य में आर्य समाज के संगठन को सशक्त बनाने के लिए वे कृत संकल्प हैं। पूरे बिहार की आर्य समाजें उनकी सभा के साथ तन–मन–धन से सहयोग कर रही हैं तथा उन्हें पूरा विश्वास है कि बिहार में आर्य समाज का संगठन तेजस्वी रूप प्राप्त करेगा।

इस चार दिवसीय कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी, आचार्य सदानन्द शास्त्री जी, आचार्य संजय सत्यार्थी जी, बहन अमृता आर्या जी एवं श्री श्यामानन्द आर्य आदि के व्याख्यान एवं भजनों की धूम मची रही। दक्षिण

शेष पृष्ठ 8 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

बोध नहीं क्रान्ति

– वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

महर्षि दयानन्द जन्मना क्रांतिकारी थे। जिसे हम बोधरात्रि कहते हैं, उसमें दयानन्द के मन में क्रान्ति का अंकुर ही फूटा था। बाद में वह अनेक रूपों में पल्लवित हुआ। दयानन्द सामान्य मानव नहीं, अपितु ऋषि को यास्काचार्य कहते हैं- ऋषिदर्शनात। जो दर्शन करे, वह ऋषि है। दर्शन तो सभी करते हैं किन्तु हम केवल वर्तमान का दर्शन करते हैं जबकि ऋषि भूत तथा भविष्य की घटनाओं, तथ्यों को भी प्रत्यक्ष के समान ही देखता है। भर्त्तहरि कहते हैं कि अतीन्द्रिय तथा अचिन्तनीय विषयों को भी ऋषि ऋषित्व बुद्धि से जान लेता है।

महर्षि दयानन्द की अनेक घोषणाएं ऐसी थी जिन पर उस समय विश्वास करना कठिन था किन्तु आज विज्ञान ने उनको सिद्ध कर दिया है। यथा महर्षि दयानन्द ने कहा कि ग्रहों में भी सृष्टि है। विमान के बनाने की बात भी उन्हीं दिनों उन्होंने की थी। आज विज्ञान ने दोनों ही घोषणाओं को सिद्ध कर दिया, जो महर्षि ने अपनी दिव्य ऋषि दष्टि से की थीं। तीसरी घोषणा इससे भी अधिक क्रान्तिकारी है। केवल सामान्य मानव की नहीं अपितु ऊँचे से ऊँचे शिक्षाविद भी डार्विन के इस सिद्धान्त से बुरी तरह प्रभावित हैं कि मानव की उत्पत्ति अमीवा नामक लघुतम जन्तु से हुई है। वहीं अमीवा विकास के अनेक सोपानों को पार करके अन्ततोगत्वा मनुष्य बना। हास्यास्पद सिद्धान्त है तथापि बुद्धिजीवियों ने इसका प्रतिवाद न करके समर्थन ही किया। महर्षि ने भी विचित्र सी घोषणा की कि आदि सृष्टि में पृथिवी के गर्भ से ही युवा मानवों की सृष्टि हुयी। यह अमैथुनी सृष्टि थी। आज विज्ञान ने भी सिद्ध कर दिया कि माता-पिता के संयोग के बिना परखनली इत्यादि के माध्यम से भी मानवोत्पत्ति हो सकती है। महर्षि की उक्त तीनों ही घोषणाएं वैचारिक जगत् में किसी क्रांति से कम नहीं थी। दूसरे देशों में तो इस प्रकार की एक-एक बात पर विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक बन जाते हैं।

ऋषि को यह दिव्य दृष्टि तो ऋषि बनने के बाद ही मिली होगी किन्तु क्रान्ति के बीज तो उनके मन में जन्म से ही विद्यमान थे। महर्षि की यह क्रान्ति दो रूपों में थी। यह हो सकता है, यह नहीं हो सकता। पत्थर पर चढ़े चूहे को माल प्रसाद खाते देखकर मूलशंकर बोला यह परमेश्वर नहीं हो सकता जो चूहे से भी अपनी रक्षा न कर सके। जब समूचा भारत उस पत्थर में परमेश्वर को मान रहा था, ऐसे में मूलशंकर की यह घोषणा किसी क्रांति से कम नहीं। अभी यह अंकुरित मात्र हुई थी तथा इसका पुष्पित एवं पल्लवित रूप लोगों ने कुम्भ में 'पाखण्ड खण्डिनी' पताका के रूप में देखा।

अब दयानन्द समग्र क्रांति के क्षेत्र में उतर आये। अद्भुत क्रांति थी वह जो कि एक ब्राह्मण ने ब्राह्मण समुदाय के विरुद्ध की। एक साधु ने साधुओं के विरुद्ध की। एक कौपीन धारी दिगम्बर ने बड़े-बड़े अखाड़ों, महन्तों के विरुद्ध की एक विद्वान् ने तात्कालिक विद्वत्समुदाय के विरुद्ध की। एक धर्मनेता ने, धर्मप्रचारक ने अन्य धर्मप्रचारकों के विरुद्ध की। एक समाज सुधारक ने सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध की। इतना ही नहीं, अपितु जिनके शासन में सूर्य नहीं छिपता था, उन अंग्रेजों उनकी सभ्यता, संस्कृति तथा भारत की पराधीनता के विरुद्ध भी दयानन्द ने क्रांति का बिगुल बजाया।

यह क्रांति दयानन्द ने अकेले की किन्तु निराधार नहीं की। वेद उनका आधार था तथा परमेश्वर सहायक। केवल इन दोनों के बल पर ही दयानन्द ने सभी को परास्त करके दिग्विजय प्राप्त की। पण्डे-पुजारियों, साधु-मंहतों के विरुद्ध दयानन्द ने यों ही शंख नहीं फूंक दिया था अपितु सबके रहस्यों को जानकर ही उनका पर्दाफाश किया था। धर्म के नाम पर चली आ रही विभिन्न कुरीतियों तथा उनके ठेकेदारों, प्रचारकों के विरुद्ध न केवल घोषणाएं अपितु युद्धस्तर पर कार्य करना दयानन्द का ही काम था। बड़े से बड़े दिग्गज पण्डितों को शास्त्रार्थ के लिए ललकारने का साहस दयानन्द ने किया। बड़ा साहस उन्हें प्रभु से प्राप्त था तथा सत्य पर आधारित था। समस्त पाश्चात्य विद्वानजगत् तथा उनके अनुयायी भारतीय भी कह रहे थे कि वेदों में गप है, अश्लीलता है, इतिहास है, मिलावट है इत्यादि। दयानन्द अकेले ही महान घोष करते हैं- वेद परमेश्वर की वाणी तथा सत्य विद्याओं की पुस्तक है। चार संहिताएं ही वेद हैं, ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं है' यह कहकर दयानन्द ने उन वेदज्ञ पण्डितों को निरूत्तर कर दिया जो ब्राह्मण ग्रन्थों को भी वेद मानते थे। इन्हीं दम्भी पण्डितों ने व्यर्थ का शब्द जाल रचकर जो क्लिष्ट ग्रन्थ बना रखे थे, दयानन्द उनका निराकरण यह कह कर करते हैं कि महर्षियों के ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है जैसा कि समुद्र में गोता लगाना तथा मोतियों का पाना। इसके विपरीत अनार्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है जैसे पहाड़ का खोदना तथा कौड़ी का लाभ होना। यह बात पण्डित दयानन्द ने वैसे ही नहीं कही थी अपितु लगभग तीन हजार ग्रन्थों की छान-बीन करके की थी। ऐसी क्रांतिकारी घोषणा करने का साहस उस समय किसी में भी नहीं था।

विद्वत क्षेत्र में उनकी एक अति महत्वपूर्ण घोषणा आर्यों के आगमन के विषय में थी। जान बूझकर एक झूठ को पाठ्यक्रम के माध्यम से प्रचारित एवं सुप्रतिष्ठित कर दिया गया था कि आर्य भारत में बाहर से आये हैं। यह इतिहास वेत्ता दयानन्द ही था जिसने सप्रमाण कहा कि आर्य भारत के ही मूल निवासी हैं। किसी भी प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ में नहीं लिखा कि आर्य बाहर से आये हैं। एक इतिहासज्ञ पुरातत्ववेता तथा विद्वान की भांति उन्होंने यह भी कहा कि आदि सृष्टि तिब्बत पर ही हुयी थी। आज इतिहास वेत्ता भी इस बात को सिद्ध कर रहे हैं।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द का समस्त जीवन, उनकी स्थापनाएं, उनके कार्यों पर दृष्टिपात करें तो यही पायेंगे कि दयानन्द जन्मजात क्रांतिकारी रहे। प्रत्येक क्षेत्र में जो नयी मान्यताएं तथा घोषणाएं उन्होंने की उनकी कल्पना भी कोई नहीं कर सकता था। दयानन्द क्योंकि पारदृष्टा ऋषि थे इसलिए उन्होंने भूत भविष्य तथा वर्तमान सभी पर दृष्टिपात करके स्पष्ट रूप में कहा- ऐसा है, ऐसा नहीं है। यह ठीक है, यह गलत है इत्यादि। शिवपिण्डी के विषय में भी बालक मूलशंकर ने यही कहा था- यह परमेश्वर नहीं हो सकता। बालक मूलशंकर का यह कदम अति साहसिक एवं क्रांतिकारी कदम था।

- बी.–266, सरस्वती विहार
दिल्ली–34, मो.:– 9868144317

दो आंसू

- कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर

जिन्हें संसार में संसार का उपकार करना था
जिन्हें दुनिया में वैदिक धर्म का विस्तार करना था
अनाथों और अछूतों का जिन्हें उद्धार करना था।
जिन्हें निज देश और जाति का बेड़ा पार करना था
उन्हें देखो कि बाहम बरसरे पैकार बैठे हैं
समाजों को मिटाने के लिए तैयार बैठे हैं।

जमाना रश्क करता था कभी वो प्यार था हममें
हर इक इक दूसरे का मूनिसो गमख्वार था हममें
धर्म पर जान देने को हर इक तैयार था हममें
बला का जोश था और जज्बये ईसार था हममें
मगर अब आर्यों में नाम को उल्फत नहीं मिलती
न वो श्रद्धा, न वो भक्ति है वो हिम्मत नहीं मिलती।

निकलते थे जो हम शानों पै वेदों के अलम रखकर
फरिश्ते भी फिदा होते थे उस पुरजोर मंजर पर
जला देते थे हम दुश्मन के खिरमन को कलम रखकर
हटाते ही न थे पीछे कभी आगे कदम रखकर
नमस्ते लब पै आते ही मुखालिफ चौंक पड़ते थे
'समाजी' नाम से पाखंडियों के होश उड़ते थे।

समाजों की मगर अब रात-दिन तहकीर होती है
रवां गर्दन पै रोज अगयार की शमशीर होती है
न वो तहरीर होती है, न वो तकदीर होती है
जो होती है तो हर इक बात बे-तासीर होती है
न वो लेखक रहे हममें, न वो तक्कार हैं बाकी
कि इस गुलशन के गुल मुरझा गए अब खार हैं बाकी।

ऋषि किस्मत से फिर इक बार यदि भारत में आ जाएं
रुखे अनवर 'मुसाफिर' आके फिर इक बार दिखलाएं
हमारे दम्भ को देखें और इस आचार पर जाएं
तो सच कहता हूँ गैरत से बिना ही मौत पर जाएं
पदों की लालसा में रोज लड़ते और लड़ाते हैं
अदायें शासकों की हैं मगर सेवक कहाते हैं।

उठो अब आर्य वीरों फिर से अपना संगठन करके
समाजों को बचाओ फूट से कोई जतन करके
मिटा दो ढोंग और पाखण्ड को भगवद् भजन करके

शिवरात्रि का महत्त्व और उसका पवित्र सन्देश

- पण्डित श्री युधिष्ठिर मीमांसक

जितने भारतीय पर्व हैं उनमें कुछ पर्वों का सम्बन्ध प्राकृतिक जगत् से है, कुछ का महापुरुषों की किसी महत्त्वपूर्ण घटना से है और कुछ का सम्बन्ध महापुरुषों की स्मृति को जीवित जागृत रखने के लिए उनके जन्मकाल से जोड़ा गया है।

शिवरात्रि पर्व का सम्बन्ध परम पवित्र लोककल्याणैकनिष्ठ महापराक्रमी आशुतोष भगवान् शंकर से है। भगवान् शंकर भारतीय इतिहास के जाज्वल्यमान रत्न थे। उनके जीवन का कुछ वृत्त (पौराणिक तथा साम्प्रदायिक कल्पनाओं को छोड़कर) महाभारत और पुराणों में सुरक्षित है। उससे उनकी महत्ता का स्पष्ट दिग्दर्शन होता है।

आज हम शिवरात्रि के पवित्र अवसर पर केवल दयानन्द के गौरवगुणगान सुन या सुनाकर अपने को कृतार्थ न समझें, अपितु अपने आत्मा का निरीक्षण करें अर्थात् हमारा आचरण कहां तक सत्यता युक्त है, हममें सत्यप्राप्ति की अभिलाषा भी है या नहीं, कहीं हमारे अन्दर अविद्या अभिमान तो नहीं है, यदि है तो उसे दूर करने के लिए प्रयत्नशील हों। भगवान् शंकर और मूलशंकर के समान भी शिवरात्रि के पवित्र सन्देश को सुनें और स्वयं शिवस्वरूप दयानन्द बन जावे

आज की ही रात्रि में दिगम्बररूप में घोर तपस्या करते हुए भगवान् शंकर के ज्ञानरूपी तृतीय नेत्र का विकास हुआ था, जिसकी प्रचण्ड अग्नि में उनके जन्म जन्मान्तर की समस्त वासनाएं भस्मीभूत हो गई और वे काम पर पूर्ण विजयी हुए। तभी से यह कल्याणकारिणी रात्रि लोक में शिवरात्रि के नाम से प्रसिद्ध है।

यही रात्रि बालक दयाशंकर (मूलशंकर) के लिए पुनः कल्याणकारिणी हुई। आज की रात्रि में दयाशंकर ने अपने गुरुजनों के साथ शिवमूर्ति की पूजा की। आराधकों के निद्राभिभूत होने पर दयाशंकर ने देखा कि एक क्षुद्र चूहा भक्तों द्वारा श्रद्धापूर्वक समर्पित भोगों को स्वच्छन्दभाव से भ्रष्टकर रहा है। इसको देखकर बालक दयाशंकर के ज्ञान नेत्र का विकास हुआ और उन्होंने उसके प्रकाश में देखा कि साधारण जन जिस पाषाणमयी मूर्ति को शिव = परमात्मा समझकर अर्चना करते हैं वह सच्चा शिव नहीं है, वह तो चूहे जैसे क्षुद्र प्राणि से भी अपनी रक्षा में असमर्थ एक निर्जीव पाषाणमात्र है, मैं आज से इसकी पूजा नहीं करूंगा और जो वास्तविक शिव है उसका अन्वेषण करूंगा। इस ज्ञान के उदय होते ही उस 13 वर्षीय बालक दयाशंकर को पूजा समाप्ति तक कुछ समय और बैठना भी भाररूप हो गया। वह तत्काल अपने पिता को निर्भयता पूर्वक मन की बात कह घर चला गया। इसी महत्त्वपूर्ण घटना के कारण आर्यजगत् में शिवरात्रि बोधरात्रि के नाम से प्रसिद्ध हुई।

आज की रात्रि में बालक दयाशंकर के हृदय में पूर्व संस्कार वश जिस ज्ञानांकुर का विकास हुआ वह उत्तरोत्तर बढ़ता गया। उसने एक दिन दयाशंकर का अपने वैभव सम्पन्न गृह से नाता तुड़वाकर सच्चे शिव की प्राप्ति के लिए वन का पथिक बना दिया। दयाशंकर ने सच्चे शिव की प्राप्ति के लिए हिंस्रजीव समाकुल अनेक वन पर्वत कन्दरा और हिमाच्छादित गिरिशिखर छान डाले। योगाभ्यासपूर्वक घोर तपस्या करके दयानिधि आनन्द कन्द भगवान् (सच्चे शिव) को प्राप्त कर स्वयं दयानन्द बन गये।

दयानन्द ने शिवरात्रि में प्रस्फुरित और तपस्या से समृद्ध सत्य ज्ञान को प्राप्त करके उसे अपने तक ही सीमित नहीं रखा। उसने संसार में व्याप्त अविद्यान्धकार को दूर करने के लिए अपना अशेष जीवन समर्पित कर दिया। इस कार्य में उन्हें महती यातनाएं सहनी पड़ी, जीवन तक उत्सर्जन करना पड़ा, परन्तु कभी अपने पथ से विचलित न हुए, अन्त तक निर्भयतापूर्वक अविद्यान्धकारग्रस्त संसार को सत्य का प्रकाश देते रहे और अपने उपदेशों (ग्रन्थों) द्वारा अनन्त काल तक देते रहेंगे।

बालक दयाशंकर को ऋषि दयानन्द बनाने का श्रेय इस शिवरात्रि को ही है। यह शिवरात्रि प्रतिवर्ष आती है और अपना दिव्य सन्देश देकर चली जाती है। अविद्यान्धकार से ग्रसित कर्णवाले हम साधारण मानवों को वह सन्देश सुनाई नहीं पड़ता। आज की रात्रि में हम भगवान् दयानन्द की महत्ता और उनके चरित्र पर व्याख्यान सुन लेते हैं और व्याख्यान दे देते हैं, किसी प्रकार दयानन्द के गौरवगुणगान कर लेते हैं परन्तु होता है सब मुख और श्रोत्र की क्रियामात्र। न उसका प्रभाव हमारे हृदय पर होता है और न मस्तिष्क पर। यही कारण है कि हम अपने जीवन में शिवरात्रि के अनेक पर्व मना चुके, शिवरात्रि के पवित्र सन्देश को सुन या सुना चुके, परन्तु हैं आज भी वहां के वहीं, जहां हम आज से बहुत वर्ष पूर्व प्रारम्भ में थे।

शिवरात्रि का मानवमात्र के लिए एक ही सन्देश है, और वह है, सत्य की उपलब्धि। भगवान् स्वयं सत्यस्वरूप हैं। हम प्रति दिन प्रार्थना करते हैं - **सत्यं पुनातु पुनः शिरसि** (हे सत्यस्वरूप भगवन् हमारे मस्तिष्क को पुनः पवित्र कीजिए।) सत्यस्वरूप भगवान् की प्राप्ति तभी हो सकती है जब हमारा मस्तिष्क पवित्र हो, बुद्धि पवित्र हो। इसीलिए प्रार्थना करते हैं - **धियो यो नः प्रचोदयात्** (बुद्धि को पवित्र कर्म में प्रेरित करो।) बुद्धि की पवित्रता तभी होती है जब मनुष्य सत्य का आचरण करे - **अग्ने नय सु पथा राये।** सत्यस्वरूप भगवान् की उपलब्धि सत्याचरण से सम्भव है। इसीलिए कहा है - **सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा।** सत्य के आचरण में मनुष्य तभी समर्थ हो सकता है जब वह श्रद्धावान् हो अर्थात् श्रत् = सत्य का धा= धारण करने की इच्छा से युक्त हो - **श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्।** बिना **श्रद्धा** = सत्य आचरण की अभिलाषा के मनुष्य को ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती, **संशयात्मा विनश्यति** - वह विनाश को प्राप्त होता है। मनुष्यजीवन को प्राप्त होकर अपने उद्देश्य में असफल रहता है।

शिवरात्रि के इस पवित्र सन्देश को सुनकर दयाशंकर दयानन्द बन गया, दयानिधि आनन्दस्वरूप भगवान् को प्राप्त किया और हमें सन्देश दे गये सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए।

ऋषि ने न केवल यह शाब्दिक सन्देश दिया अपितु अपने जीवन में इस सन्देश को घटाकर बता दिया कि किस प्रकार सत्य को ग्रहण करके और असत्य को छोड़कर मनुष्य अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त होता है। उनका सारा जीवन उपर्युक्त नियम की क्रियाफल व्याख्या है।

आओ आज हम सब मिलकर शिवरात्रि के पवित्र सन्देश को सुनाने वाले सत्यस्वरूप भगवान् दयानन्द का क्रियात्मक रूप में गौरवगुणगान करें अर्थात् स्वयं उसके अनुकूल अपने जीवनों को ढालने का प्रयत्न करें। **मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्** मन, वचन और कर्म में एकता लाकर स्वयं महान् बनें।

मनुष्य की गिरावट का प्रथम और मुख्य कारण है अभिमान - **पराभावस्यै तन्मुखं यदतिमानः** (शतपथ)। अभिमान मनुष्य में तभी तक रहता है जब तक उसमें श्रद्धा = सत्य ज्ञान की प्राप्ति की अभिलाषा उत्पन्न नहीं होती। जब मनुष्य में श्रद्धा का उदय होता है तब मनुष्य अपने को अपूर्ण समझने लगता है। जिस क्षण मनुष्य को अपनी अपूर्णता का ज्ञान होता है उसी समय अभिमान भस्मीभूत हो जाता है और वह अपनी अपूर्णता को पूर्ण करने की चेष्टा में लग जाता है।

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।

विद्या = ज्ञान से मनुष्य में **विनय** = अभिमान का अभाव होता है और विनीत = अभिमान रहित होने पर मनुष्य सत्य को प्राप्त करने में समर्थ होता है। जिस व्यक्ति में अभिमान हो वह निश्चय ही विद्या से रहित होता है।

इसीलिए आवश्यक है कि सत्य ज्ञान की प्राप्ति के लिए हम श्रद्धा का आह्वान करें :-

श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यंदिनं परि।
श्रद्धां सूर्यस्य निम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः॥ ऋ. 10.151.5॥

हम प्रातः, मध्यान्ह और सायं अर्थात् प्रत्येक क्षण में श्रद्धा = सत्यप्राप्ति की अभिलाषा से युक्त रहें।

आज हम शिवरात्रि के पवित्र अवसर पर केवल दयानन्द के गौरवगुणगान सुन या सुनाकर अपने को कृतार्थ न समझें, अपितु अपने आत्मा का निरीक्षण करें अर्थात् हमारा आचरण कहां तक सत्यता युक्त है, हममें सत्यप्राप्ति की अभिलाषा भी है या नहीं, कहीं हमारे अन्दर अविद्या अभिमान तो नहीं है, यदि है तो उसे दूर करने के लिए प्रयत्नशील हों। भगवान् शंकर और मूलशंकर के समान भी शिवरात्रि के पवित्र सन्देश को सुनें और स्वयं शिवस्वरूप दयानन्द बन जावें।

- मोतीझील, काशी (उ. प्र.)

एक बार फिर आना होगा.....

पाखण्डों के गढ़ में फिर वेदों का शंख बजाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।
खूब हो रही पत्थर पूजा निराकार प्रभु को हैं भूले।
नए-नए पाखण्ड रचा कर, ढोंगी दलदल बाबा फूले।।
ऐसे धूर्त ठगो को अब सत्यार्थ प्रकाश पढ़ाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।
भारत में हिन्दी की देखो कैसी दुखद हुई है दुर्गति?
जन-मानस में फिर स्थापित हो हिन्दी, ऐसी दो सन्मति।।
भारत माँ को हिन्दी के किरीट से पुनः सजाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।
नारी आज भोग्या बनकर भारत भर में लुटी पिटी है।
मातृ शक्ति को पूजित, सम्मानित करने की वृत्ति मिटी है।।
फिर से नारी को भोग्या से पूज्या हमें बनाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।
गूँजे बेटी की किलकारी, ऐसी बहे स्नेह की गंगा।
कन्या भ्रूण मिटाने वालों को समाज में कर दें नंगा।।
बेटी के हत्यारों को अब फांसी पर लटकाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।
भारत में कट रहीं आज भी नित-नित लाखों गौ माताएँ।
इनकी दारूण व्यथा कथा हम किसे सुनाएं? किसे बताएँ??
जन-जन में जा कर गौ करूणा निधि का अलख जगाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।
भूले मात-पिता की सेवा, भूले वृद्ध जनों का आदर।
गुड्डा गुड़िया पूज रहे हैं, चढ़ा रहे कब्रो पर चादर।।
दसवां, मृतक भोज, तेरही, बरखी है व्यर्थ, बताना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।
शाकाहार त्याग कर दुनिया हुई जा रही मांसाहारी।
धूम्रपान अरू मद्यपान से दस दिश फैल रही बीमारी।।
हो आहार-विहार सात्विक, यह सबको समझाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।
पर्यावरण अशुद्ध हो रहा, प्रकृति हो रही है नित आहत।
जल, थल, वायु हो रहे दूषित, यज्ञ मात्र से होगी राहत।।
यज्ञ सर्व जन के हित में है, सबको यज्ञ कराना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।
नया नाम डेटिंग काले कर, खूब वैश्यावृत्ति हो रही।
नवयुवकों में बेशर्मी से इसकी अति आवृत्ति हो रही।
सत्रह बार जहर खाया है, कई बार फिर खाना होगा।।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।
वेद प्रचारित करने खातिर ईंटे, रोड़े, पत्थर खाए।
कष्ट सहे जीवन भर लेकिन अडिग रहे, तुम ना घबराए।।
वेदों के दीपक पर क्या तुम सा कोई परवाना होगा?
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।
पाखण्डों के गढ़ में फिर वेदों का शंख बजाना होगा।
दयानन्द! भारत में तुमको एक बार फिर आना होगा।।

- हरि कुमार साहू, पूर्व मंत्री, आर्य समाज, गोंड़पारा, बिलासपुर (छत्तीसगढ़), मो.:- 9301142737

आर्य राष्ट्र बनायेंगे

स्वामी दयानन्द सरस्वती

।। ओ

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो वि

आर्य समाज के स

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

की स्थापना के 50 वर्ष पूरे

बलमुपास्व

स्वर्ण जयन

दिनांक : 9, 10 मार्च, 2

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ अ

आप सादर सपरिवार आमंत्रित हैं। अधिक से अधिक युवाओं (युवक,

उद्‌बोधन	:	स्वामी अग्निवेश जी
मुख्य अतिथि	:	चौ. हरिसिंह सैनी, पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार
विशिष्ट अतिथि	:	प्रो. विट्ठलराव आर्य, महामंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
	:	ठाकुर विक्रम सिंह, अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी
	:	श्री सत्यव्रत सामवेदी, कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
	:	डॉ. यशदेव शास्त्री जी, पतंजलि योग पीठ, हरिद्वार
	:	डॉ. धीरज सिंह जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश
ध्वजारोहण	:	पं. माया प्रकाश त्यागी जी, कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक सभा
यज्ञ ब्रह्मा	:	स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज, वेदाचार्य, दर्शनाचार्य एवं व्याकरणाचार्य
मुख्य यजमान	:	श्री अरविन्द मेहता एवं श्रीमती मधुर भाषिणी मेहता
	:	श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री
	:	श्री सुनील देशवाल एवं श्रीमती श्वेता देशवाल
	:	डॉ. रणवीर खासा एवं श्रीमती सुनीता आर्या
स्वागताध्यक्ष	:	वैद्य सत्यप्रकाश आर्य, संस्थापक, नाड़ी वैद्य कायाकल्प
भजनोपदेशक	:	सर्वश्री सहदेव बेधड़क, कैलाश कर्मठ, रामनिवास आर्य, नरदेव बेनीवाल, कल्याणी आर्या
संयोजक स्वागत समिति	:	ठेकेदार महावीर सिंह कुण्डू, श्री रामचन्द्र ठेकेदार

आशीर्वाद एवं सान्निध्य :- स्वामी विवेकानन्द सरस्व
सर्वदानन्द सरस्वती जी (धीरणवास), स्वामी प्रणवानन्
(राजस्थान), स्वामी सुधानन्द सरस्वती जी (राजस्थान),
स्वामी ओमवेश जी (बिजनौर), स्वामी यतीश्वरानन्द जी
आनन्दवेश जी (शुक्रताल), स्वामी धर्ममुनि जी (बह
(मथुरा), स्वामी शान्तानन्द जी (अलीगढ़), स्वामी वि
सम्पूर्णानन्द जी (मथुरा), स्वामी करुणानन्द जी (साह
(गुरुकुल लाढ़ौत), स्वामी वेद प्रकाश जी (हिमाचल प्र
(मथुरा), स्वामी निर्भयानन्द जी (म. प्र.), स्वामी स
विशुद्धानन्द जी (उड़ीसा), स्वामी देवेश्वरानन्द जी (मेरठ
स्वामी महानन्द जी (बुलन्दशहर), स्वामी महानन्द जी (श्

निवेदक :- स्वामी आर्यवेश (प्रधान), बिरजानन्द ए
पूनम आर्या, बहन प्रवेश आर्या, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य (प्रधा
सूर्यवंशी (हिमाचल प्रदेश), अजय अमर चौरसिया (
(अमेरिका), अनेस रामक्लाश (दक्षिण अफ्रीका), य
मोहन भण्डारी (उपमंत्री), धर्मवीर आर्य (बहरोड़, उप
सिंह आदित्य (दिल्ली), विजय कुमार चौधरी (दिल्ल

स्वागत समिति :- सज्जन राठी, प्रदीप कुमार, अशोक आर्य, जयपाल आर्य, डॉ. पवन आर्य, अजयपाल आर्य, हरपाल आर्य, प्रवीण आर्य, आजाद सिंह, रामबीर योगाचार्य, ऋषिराज शास्त्री, विवेकानन्द शास्त्री, डॉ. श्
बंसीलाल आर्य, ओम प्रकाश आर्य, शमसेर आर्य (फतेहाबाद), बाबूलाल आर्य, राम अवतार आर्य, अजय शास्त्री, अशोक आर्य, डॉ. एन. पी. गौड़, उमेश आर्य, प्रिं. धूपसिंह आर्य, फूलचन्द आर्य, ओम प्रकाश शास्त्री,
मुक्तानन्दा, डॉ. नानकचन्द आर्य (गुरुग्राम), नारायण सिंह आर्य, ठाकुरलाल आर्य, सुरेन्द्र आर्य, ब्र. राजदेव आर्य, जय प्रकाश आर्य, चन्द्रपाल आर्य, श्रीचन्द आर्य, यादराम विद्यार्थी (पलवल), प्रेम मित्तल एडवोकेट, ज
सिंह, राजेन्द्र सिंह चहल, धर्म प्रकाश दहिया, प्रताप सिंह शास्त्री, कपिलदेव दहिया, मंजीत दहिया, नरेन्द्र सिंह, डॉ. यशपाल आर्य, अमित आर्य, अंकित बांगड़ (सोनीपत), दीपक कथूरिया, नकुल सिंह एडवोकेट (पा
श्यामलाल, अमित गुप्ता, सुरेन्द्र पहलवान, महावीर सिंह, सत्यवान मलिक, जगमति मलिक, हरिकेश राविश, प्रीतपाल कालड़ा, किरण पाल आर्य (कैथल), डॉ. राजपाल आर्य, धर्मवीर सरपंच, सूरजमल आर्य, सोनू अ
पौली, कृष्ण नन्दगढ़, कृष्ण चन्द्र आर्य (सफीदों), कर्ण सिंह रेढू, केवल सिंह जुलानी (जीन्द), डॉ. धर्मवीर आर्य, रमेश कौशिक, जय भगवान आर्य, मा. द्वारकादास, सुभाष आर्य, वीरदेव आर्य, हरिओम एडवोकेट स
(सिंहपुरा कला), विनोद हुड्डा (रोहतक), अर्जुन सिंह (रोहतक), राजवीर आर्य (मोखरा), कर्मवीर आर्य, (खरकड़ा) नफे सिंह आर्य, डॉ. राजेश, देवेन्द्र आर्य (हरफाणा), शेर सिंह शास्त्री (सांघी), जागेराम आर्य (
रोहताश देशवाल (लाढौत), श्री निवास आर्य, टेकराम आर्य, हनुमन्त सिंह आर्य, मा. प्रताप सिंह आर्य (मकड़ौली), नरेन्द्र हुड्डा (धामड़), भूप सिंह पहलवान (जसिया), इन्द्रजीत राणा, अजमेर शास्त्री (रोहतक), म
(खोखा), सूबे सिंह आर्य (मुकलान), राजेन्द्र मलिक (उमरा), जय प्रकाश कोहरा (भिवानी), कुवंर रमेश आर्य (पलवल), राम कुमार आर्य, डॉ. महावीर सिंह, दयानन्द शास्त्री, वीरेन्द्र शास्त्री, डॉ. धर्मवीर कुण्डू, व
सरपंच, डॉ. नारायण सिंह, जय भगवान, डॉ. महेन्द्र सिंह, दिलबाग सिंह, रामफल आर्य (टिटौली), सन्त कुमार आर्य (लुधियाना), मेजर विजय आर्य, राजकुमार आर्य, सोमदत्त शास्त्री, अशोक आर्य (चण्डीगढ़), हाकम
), सोमदेव शास्त्री, चन्द्रदेव शास्त्री, राजवीर शास्त्री, डॉ. वेदवीर शास्त्री, अमित मान (दिल्ली), सन्तोष शास्त्री, रामपाल आर्य (नरेला), राव रघुनाथ सिंह (दिल्ली), श्री राम कुमार सिंह आर्य, श्री महेन्द्र भाई (दिल्ली),
शर्मा (जयपुर), ओम पहलवान (रोहतक), मनसा राम आर्य (कोलकाता), भंवरलाल आर्य, नारायण सिंह आर्य, चांदमल आर्य, शिवदत्त आर्य, विनोद आर्य, हरदेव सिंह आर्य, रामकृष्ण शास्त्री, जानकी प्रसाद शर्मा, रा
आर्या, मीनू आर्या, गायत्री आर्या, ज्योति आर्या, पूनम आर्या, निशा आर्या, शिखा आर्या, अंजलि आर्या, किरण आर्या, मनीषा आर्या, प्रीति आर्या, नीलम देवी, रश्मि, कृष्णा देवी, दीप्ति आर्या, विनीता आर्या, ज्योति आर्या, प्रा

–: आयो

युवा निर्माण अभियान, स्वामी इन्द्रवेश फाऊण्डेश

9416630916, 93548

संसार के श्रेष्ठ पुरुषों एक हो जाओ

म् ।।

ोश्वमार्यम् अपघ्नन्तो अरावणः।।

शक्त युवा संगठन

एवं लोकप्रिय पत्रिका 'राजधर्म'

ोने के उपलक्ष्य में आयोजित

स्वामी इन्द्रवेश

ती समारोह

019 (शनिवार, रविवार)

ाश्रम, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

युवतियों) को आर्य समाज से जोड़ने के लिए समारोह में लेकर आयें!

ी जी (मेरठ), स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी (उड़ीसा), स्वामी सरस्वती जी (दिल्ली), स्वामी सुमेधानन्द जी सांसद सीकर स्वामी चन्द्रवेश जी (गाजियाबाद), स्वामी रामवेश जी (जीन्द), वधायक (हरिद्वार), स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी पूठ (उ. प्र.), स्वामी ुरगढ़), स्वामी व्रतानन्द जी (उड़ीसा), स्वामी सोम्यानन्द जी श्वानन्द जी (मथुरा), स्वामी योगानन्द जी (आगरा), स्वामी द), स्वामी सच्चिदानन्द जी (यमुनानगर), आचार्य हरिदत्त जी देश), स्वामी निर्भयानन्द जी (हाथरस), स्वामी प्रकाशानन्द जी वितानन्द जी (रांची), स्वामी सोमवेश जी (उड़ीसा), स्वामी , स्वामी सूर्यवेश जी (बिजनौर), स्वामी अखिलानन्द जी (पूठ), क्रताल), स्वामी ब्रह्मानन्द जी (बरेली)।

आमन्त्रित विद्वान एवं नेता :- डॉ. वेद प्रताप वैदिक (दिल्ली), आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय (दिल्ली), डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई), प्रो. वीरेन्द्र (रोहतक), श्री प्रेमपाल शास्त्री (दिल्ली), डॉ. बलवीर आचार्य (रोहतक), श्रीमती मनीषा पंवार (विधायक जोधुपर), श्री देवेन्द्र पाल वर्मा (मुजफ्फरनगर), श्री अनिल आर्य (अध्यक्ष के.आ.यु.परिषद्), श्री राम सिंह आर्य (उपमंत्री सार्वदेशिक सभा), श्री हवा सिंह हुड्डा (रोहतक), श्री विशाल मलिक (गुरुग्राम), श्री आर.एस. तोमर एडवोकेट (दिल्ली), श्री मधुर प्रकाश (उपमंत्री, सार्वदेशिक सभा), श्री अश्विनी शर्मा एडवोकेट (जालन्धर), श्री गोविन्द सिंह भण्डारी (बागेश्वर), श्री लाजपत राय चौधरी (करनाल), पं. रघुवीर सिंह आर्य (शामली), प्रो. बलजीत सिंह आर्य (बड़ौत), डॉ. लक्ष्मादास आर्य (म. प्र.), श्री धर्मपाल एडवोकेट (चिड़ावा), श्री मानपाल सिंह राठी (उत्तराखण्ड), श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव (खण्डवा, म. प्र.), श्री श्रीराम आर्य (कोलकाता), श्री रामेन्द्र गुप्ता (पटना, बिहार), श्री प्रेम प्रकाश आर्य (रांची), श्री राममोहन राय एडवोकेट (पानीपत), डॉ. प्रकाशवीर विद्यालंकार (रोहतक), श्री रणवीर सिंह शास्त्री (बवाना, दिल्ली), श्री अजीत सिंह एडवोकेट (पूर्व विधायक, झज्जर), श्री इन्द्रजीत आर्य (नरवाना), प्रिं. सदाविजय आर्य (महाराष्ट्र), वैद्य इन्द्रदेव आर्य (दिल्ली), श्री हवा सिंह आर्य (चांद गोठी), श्री राजसिंह आर्य (रोहतक), श्री जगदीश सर्राफ (भिवानी), डॉ. नवीन आर्य (अमृतसर), श्री दलपत सिंह आर्य (जालौर), चौ. जयसिंह ठेकेदार (गोहाना), श्री धर्मवीर आर्य (बरवाला), श्री सत्यपाल (हिसार), श्री इन्दर सिंह आर्य (पूर्व एस.डी.एम. भिवानी), डॉ. भूप सिंह आर्य (भिवानी), आचार्य इन्द्रपाल शास्त्री (शुक्रताल)।

वोकेट (महामंत्री), स्वामी विजयवेश (व्यायामाचार्य), आचार्य हरपाल शास्त्री (व्यायामाचार्य), स्वामी श्रद्धानन्द (उपप्रधान), स्वामी नित्यानन्द (उपमंत्री), ओम प्रकाश आर्य (पंजाब), बहन न सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा), रामानन्द आर्य (बिहार), डॉ. वीरेन्द्र पंवार (उत्तराखण्ड), ब्र. रामफल आर्य (उ. प्र.), कमल आर्य (म. प्र.), धर्मेन्द्र आर्य (दिल्ली), चतर सिंह दर्भ), स्वामी सम्यक क्रांतिवेश (महाराष्ट्र), यशपाल 'यश' (राजस्थान), सुधीर कुमार शास्त्री (उड़ीसा), पूर्ण चन्द्र आर्य (झारखण्ड), डॉ. कमल नारायण आर्य (छत्तीसगढ़), चन्द्रभान आर्य शपाल अंगिरा (केनिया), नरेदव यजुर्वेदी (हालैण्ड), राम प्रहलाद शर्मा (जर्मनी), सुभाष शास्त्री (बांग्लादेश), स्वामी कमलानन्द (चैकोस्लोवाकिया), प्रिं. आजाद सिंह (उपमंत्री), बृजेन्द्र मंत्री), चौ. जय प्रकाश आर्य (सोहटी, उपप्रधान), रामनिवास आर्य (नारनौल, उपप्रधान), सन्तराम आर्य (उपप्रधान), विश्वबन्धु शास्त्री (आहूलाना), डॉ. शीशराम आर्य (उपमंत्री), बलजीत), आचार्य यशोवर्धन (मेरठ), रामपाल शास्त्री (सुरहेती), वैद्य शिरोमणि आर्य (म. प्र.)।

मदेव, सत्यव्रत शास्त्री, धर्मदेव शास्त्री, दलबीर आर्य (मुकलान), देवेन्द्र सैनी, सत्य प्रकाश आर्य, जयवीर सोनी (हिसार), इन्द्रपाल आर्य, जगदीश सींवर, भीष्म शास्त्री (सिरसा), सुनील शास्त्री, डॉ. राजबीर आर्य, दिनेश आर्य (भिवानी), कर्ण सिंह खोस्या, सुशील आर्य, डॉ. चतर सिंह, सतीश आर्य (महेन्द्रगढ़), सुरेन्द्र यादव, रामनिवास गांधी, अशोक आर्य, जय प्रकाश आर्य (रेवाड़ी), हंसराज आर्य, अश्विनी पंडित, स्वामी दीश आर्य, ऋषिपाल आर्य, डॉ. गजराज आर्य, महेश अग्रवाल, कुलभूषण आर्य, बाल किशन शास्त्री, मकेन्द्र आर्य, लाला मेघराज आर्य (फरीदाबाद), बलराम आर्य, राम कुमार आर्य, पवन आर्य, जितेन्द्र आर्य, भगत ोपत), यशवीर शास्त्री, प्रो. आनन्द सिंह (करनाल), डॉ. अतुल यादव, जोगेन्द्र आर्य (कुरुक्षेत्र), विक्रमादित्य एडवोकेट, मोहित कुमार आर्य, प्रितम लाल आर्य (यमुनानगर), सत्यवीर आर्य, डॉ. होशियार सिंह, मा. र्य, कर्मपाल आर्य, मा. अजीत पाल, जगफूल सिंह ढिल्लों, मनीष (चाँदपुर), विजय कुमार आर्य, नरेश आर्य, अश्वनी आर्य, अनिल आर्य, धूलाराम थुआ, विरेन्द्र लाठर, जसवन्त आर्य, डॉ. बलबीर आर्य, ईश्वर सिंह रपंच, डॉ. परवीन्द्र, प्रदीप सरपंच, अनिल पहलवान, बिजेन्द्र पहलवान, वैद्य रमेश आर्य, वैद्य धर्मपाल खाचरौली (झज्जर), रामचन्द्र पूनिया (दादरी), चन्द्रप्रकाश मलिक, ओम प्रकाश (भिवानी), वेद प्रकाश आर्य खिडवाली), यज्ञवीर आर्य, रामचन्द्र आर्य (सूंडाना), डॉ. ईश्वर सिंह (खरावड़), डॉ. बलवीर सिंह शास्त्री, महावीर शास्त्री, डॉ. स्वतन्त्रतानन्द शास्त्री (रोहतक), राज कुमार आर्य, राजेन्द्र आर्य, वीरपाल देशवाल, डॉ. ा. गजनूप पी.टी.आई., प्रिं. महेन्द्र सिंह शास्त्री (रोहतक), वेदपाल शास्त्री (महेन्द्रगढ़), बुद्धराम आर्य (फतेहाबाद), कृष्ण कुमार बब्बर (हांसी), आत्म प्रकाश (उगालन), अनिल सरपंच (कौथ), कर्ण सिंह आर्य ष्ण प्रजापत, जिले सिंह आर्य, जिले सिंह कुण्डू, चौ. सिंहराम कुण्डू, पं. नरेश आर्य, चन्द्रशेखर शास्त्री, बलवान सिंह आर्य, महासिंह, राजेन्द्र सिंह, वीरेन्द्र आर्य, कृष्ण आर्य, तकदीर सिंह आर्य, नरदेव आर्य, प्रोमिला सिंह आर्य, अभिषेक चौहान, दयाकृष्ण काण्डपाल (उत्तराखण्ड), मनोचा खण्डेलवाल, संहसरपाल आर्य, शिव कुमार आर्य, विपिन आर्य, रमाकान्त सारस्वत, अमरजीत आर्य, गुलाब सिंह आर्य, श्रीपाल आर्य (उ. प्र. श्री सत्यवीर सिंह फौजी (सिरसली), आचार्य अरविन्द शास्त्री (बरनावा), संजय सत्यार्थी, अरुण आर्य (बिहार), बिजेन्द्र मलिक, अंकित एडवोकेट, डॉ. अमर सिंह पूनिया (उ. प्र.), वीरपाल आर्य (मुम्बई), जयदेव जेश याज्ञिक, शशि आर्या, सुषमा आर्या, रिंकू आर्या, विकास आर्या, इन्दू आर्या, मुकेश आर्या, सोनिया आर्या, सुमन आर्या, रीमा आर्या, किरण आर्या, मोनिका आर्या, राजकुमारी आर्या, एकता आर्या, पूजा आर्या, मन्जू वी आर्या, वीरमती आर्या, कल्याणी आर्या, सुनीता आर्या, लोकेश आर्य।

जक :-

ान, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, हरियाणा

40454, 9468165946

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व

82वें जन्मदिवस पर विशेष

कीर्तिर्यस्य स जीवति

आर्य राष्ट्र के स्वप्नदृष्टा स्वामी इन्द्रवेश जी

– स्वामी आर्यवेश

जन्म–१३ मार्च, १६३७
जन्मस्थान–ग्राम सुण्डाना, जिला-रोहतक
माता-पिता– श्रीमती पतोरी देवी, श्री प्रभुदयाल जी

प्रारम्भिक शिक्षा : गांव के स्कूल से मिडल तक पढ़ने के बाद आप विरक्तभाव से घर छोड़कर गुरुकुल झज्जर आये। कुछ समय यहां पढ़ाई प्रारम्भ करने के पश्चात् आपने छह महीने तक गांव बेरी (झज्जर) के एक मन्दिर में आचार्य बलदेव जी के साथ पं० राजवीर शास्त्री से संस्कृत का अध्ययन किया। आचार्य बलदेव जी भी तभी घर छोड़कर आये थे। बाद में उत्तर प्रदेश के नौनेर, सिरसागंज आदि गुरुकुलों में अध्ययन किया तथा संस्कृत महाविद्यालय यमुनानगर में स्वामी आत्मानन्द जी के सान्निध्य में शेष पढ़ाई पूरी की। व्याकरणाचार्य, आयुर्वेदाचार्य एवं दर्शनाचार्य स्तर की पढ़ाई पूरी की। तत्पश्चात आपने स्वामी ओमानन्द जी महाराज (पूर्व आचार्य भगवानदेव) के सान्निध्य में गुरुकुल झज्जर के प्रधानाचार्य का कार्यभार सम्भाला। स्वामी ओमानन्द जी के अति प्रिय शिष्यों में आप भी एक थे इसीलिये आपको उन्होंने गुरुकुल का पूरा कार्यभार सम्भलवा दिया था। अष्टाध्यायी, महाभाष्य, दर्शन आदि के आप मर्मज्ञ थे। व्यायाम में आपकी विशेष रुचि थी। उस समय आपका नाम ब्र० इन्द्रदेव मेधार्थी था।

सामाजिक जीवन की शुरुआत :–

सन् १६६६ में स्वामी अग्निवेश (पूर्व नाम प्रो० श्यामराव) कलकत्ता से गुरुकुल झज्जर आकर स्वामी इन्द्रवेश (पूर्व नाम ब्र० इन्द्रदेव मेधार्थी) से मिले तथा दोनों ने सामाजिक जीवन में उतरने का निर्णय किया। उनका यह आत्मीय सम्बन्ध अंतिम क्षणों तक अटूट रहा। दोनों ही नेताओं ने एक दूसरे का पूरक बनकर अपने सामाजिक दायित्व को निभाया। १६६७ में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के नाम से युवकों का संगठन बनाकर कार्य प्रारम्भ किया। उनके साथ उसी समय स्वामी आदित्यवेश (पूर्व नाम आचार्य रामानन्द), स्वामी शक्तिवेश (पूर्व नाम डा० कृष्णदत्त), ब्र० कर्मपाल जी, प्रो० उमेदसिंह, प्रो० बलजीतसिंह आर्य, मा० धर्मपाल आर्य, ओमप्रकाश पत्रकार, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी योगानन्द, मनुदेव आर्य, राजसिंह आर्य आदि अनेक युवक कार्यक्षेत्र में उतरे तथा आर्यजगत् में युवक क्रान्ति अभियान के नाम से एक नया अध्याय शुरू हो गया। १६६८ में अपने युवक अभियान के शंखनाद के रूप में **राजधर्म** नाम से पाक्षिक पत्र भी उसी समय प्रारम्भ कर दिया गया जो अभी तक निरन्तर निकल रहा है। युवकों को संगठित करने एवं जनसामान्य तक अपनी बात पहुँचाने के लिए १६६७ में गुरुकुल झज्जर को छोड़ दिया तथा कुरुक्षेत्र से दिल्ली तक की पदयात्रा का ऐतिहासिक आयोजन किया। यह यात्रा सैकड़ों गांवों, कस्बों व नगरों से होती हुई पन्द्रह दिन बाद दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले के समक्ष जलती मशाल हाथों में लेकर आर्य राष्ट्र की स्थापना के संकल्प के साथ सम्पन्न हुई। सन् १६६६ में हरयाणा की जनता द्वारा छेड़े गये चण्डीगढ़ आन्दोलन में युवावर्ग का नेतृत्व करते हुये स्वामी इन्द्रवेश व उनके साथी जेल गये। रोहतक सेन्ट्रल जेल में ही उन्होंने अपने अभिन्न साथी स्वामी अग्निवेश के साथ संन्यास लेने का संकल्प लिया।

७ अप्रैल १६७० को दयानन्द मठ रोहतक में स्वामी इद्रवेश जी ने स्वामी अग्निवेश एवं स्वामी सत्यपति के साथ वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् स्वामी ब्रह्ममुनि जी से संन्यास की दीक्षा ली। उसी दिन स्वामीद्वय ने आर्य राष्ट्र के निर्माण का संकल्प लेते हुए **आर्यसभा** नाम से राजनीतिक पार्टी की भी स्थापना कर ली तथा सक्रिय राजनीति में उतर गये।

१६७२ में विधानसभा के चुनावों में आर्यसभा के दो विधायक चुने गये तथा आर्यसभा हरयाणा की सर्वाधिक वोट प्राप्त करने वाली विपक्षी पार्टी बन गई।

सन् १६७३ में किसान संघर्ष समिति का गठन करके गेहूँ के भाव को लेकर जबरदस्त आन्दोलन शुरू किया। गेहूँ का भाव बढ़वाने के लिये दिल्ली के वोट क्लब पर संसद के समक्ष आमरण अनशन किया तथा गेहूँ का भाव ७६ रुपये से १०५ रुपये करवाने में सफलता प्राप्त की।

सन् १६७४ में आर्यसमाज की सर्वाधिक सशक्त सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जिसमें दिल्ली, हरयाणा, पंजाब की आर्यसमाजें, शिक्षण संस्थायें व गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, कन्या गुरुकुल देहरादून, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी आदि सम्मिलित थी, के चुनाव में प्रधान चुने गये तथा गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति बने। यह चुनाव हाईकोर्ट की देखरेख में सम्पन्न हुआ था।

सन् १६७५ में लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा छेड़े गये आन्दोलन में हरयाणा जनसंघर्ष समिति के अध्यक्ष के रूप में जे० पी० ने स्वामी जी को आंदोलन की बागडोर सौंपी। इस समिति में चौ० देवीलाल, स्वामी अग्निवेश, डा० मंगलसेन, मनीराम बागड़ी, चौ० शिवराम वर्मा, बलवन्तराय तायल, पं० श्रीराम शर्मा, चौ० चाँदराम, चौ० मुख्त्यारसिंह, चौ० धर्मसिंह राठी आदि हरयाणा के समस्त दिग्गज नेता सदस्य थे।

सन् १६७५ में आपातकाल के दौरान मीसा के अन्तर्गत नजरबन्द किये गये। एमरजेंसी के बाद आर्यसभा का अन्य सभी पार्टियों की तरह जनता पार्टी में विलय कर दिया गया तथा सन् १६८० के लोकसभा चुनाव में आप रोहतक से लोकदल के टिकट पर सांसद चुने गये।

सन् १६८६ में राजीव–लौंगोवाल समझौते एवं पंजाब में फैल रहे उग्रवाद के खिलाफ छोटूराम पार्क रोहतक में आपने २१ दिन की भूख हड़ताल की। अनशन समाप्ति पर तत्कालीन आर्यनेता लाला रामगोपाल शालवाले जूस पिलाने के लिए पधारे।

सन् १६६२ में शराबबन्दी आन्दोलन की शुरूआत की तथा पूर्ण शराबबन्दी लागू होने तक सफलता के साथ नेतृत्व किया। सन् १६६३ में दिल्ली से हिसार की शराबबन्दी पदयात्रा का नेतृत्व किया। इस यात्रा में लगभग पांच हजार स्त्री–पुरुष सम्मिलित हुये जो सुदूर महाराष्ट्र व गुजरात तक से आये थे। यात्रा के विराट् रूप को भांप कर हरयाणा सरकार कांप उठी थी।

सन् २००१ में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान निर्वाचित हुये। वर्तमान में आप आर्य विद्यासभा गुरुकुल कांगड़ी के प्रधान पद को सुशोभित कर रहे थे।

विविध गतिविधियां :–

१. अपने जीवन की विशेष योजना को मूर्तरूप देते हुए स्वामी जी ने सैकड़ों लोगों को संन्यास, वानप्रस्थ एवं नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षायें दीं तथा हजारों योग्य एवं शिक्षित युवकों को आर्यसमाज में दीक्षित किया।

२. ब्रह्मचर्य–व्यायाम प्रशिक्षण एवं युवानिर्माण शिविरों के माध्यम से पूरे देश में युवक क्रान्ति अभियान चलाया तथा आर्यसमाज में नया जीवन फूंका।

३. पदयात्राओं, शिविरों, व्यायाम–प्रदर्शनों, जनचेतना यात्राओं के माध्यम से आर्यसमाज का प्रचार करने की परम्परा उन्होंने ही प्रारम्भ की।

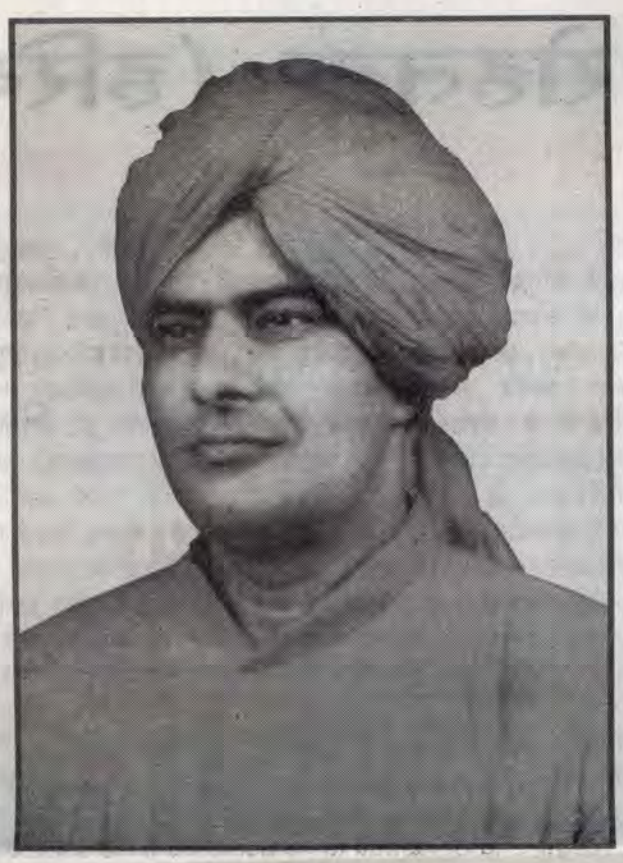

४. गुरुकुल मटिण्डू (सोनीपत) के वे लम्बे समय तक प्रधान रहे। इसी प्रकार सन् १६७८ से ८५ तक गुरुकुल सिंहपुरा–सुन्दरपुर जिला

रोहतक का संचालन कर संस्था को चार चाँद लगाये जो हरयाणा की समस्त आर्यसामाजिक गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ है। गुरुकुल सिंहपुरा सुन्दरपुर (रोहतक) में महर्षि दयानन्द साधु आश्रम एवं गोशाला के भवन का निर्माण कराया एवं गुरुकुल को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया।

५. उत्तर प्रदेश के केवलानन्द निगमाश्रम गंज बिजनौर में छह सौ बीघा भूमि एवं विशाल आश्रम है। आश्रम के अन्तर्गत संस्कृत महाविद्यालय, बी.एड. तथा नर्सिंग कालेज, विशाल गऊशाला एवं खेल स्टेडियम आदि संस्थान संचालित हो रहे हैं। यह आश्रम स्वामी सुखानन्द जी महाराज ने सन् १६८६ में स्वामी इन्द्रवेश जी को सौंप दिया था, जिसका संचालन पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी अभी तक कर रहे थे। इसी आश्रम की एक शाखा गंगा डेरा छींटावाला (पटियाला) पंजाब में स्थित है जो आपके निर्देशन में स्वामी ब्रह्मवेश चला रहे हैं। केवलानन्द निगमाश्रम के विशाल संस्थान का संचालन आपके कर्मठ एवं सुयोग्य शिष्य स्वामी ओम्वेश जी कुशलता के साथ कर रहे हैं।

६. महर्षि दयानन्द धाम अमृतसर (पंजाब), महर्षि दयानन्द धाम मिर्जापुर (फरीदाबाद) हरयाणा, महर्षि दयानन्द प्राकृतिक एवं योग चिकित्सा आश्रम जीन्द (हरयाणा), महर्षि दयानन्द धाम बरगढ़ (उड़ीसा) आदि केन्द्र स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा से अपने–अपने क्षेत्र में वेदप्रचार एवं सेवा का ठोस कार्य कर रहे हैं।

७. स्वामी जी की अध्यक्षता में गठित वेदप्रचार आयोजन समिति के तत्वावधान में वर्ष १६८६ में कुम्भमेला हरिद्वार में चालीस दिन का वेदप्रचार शिविर लगाया गया जिसमें गाय के घी से चतुर्वेद पारायण यज्ञ, विभिन्न सम्मेलन, योग शिविर, ऐतिहासिक शोभायात्रा एवं शास्त्रार्थ की चुनौती देकर पौराणिक जगत् में हलचल पैदा की, १६८६ के वेदप्रचार शिविर से पूर्व कुम्भ मेले में आर्यसमाज का शिविर लगभग ६० साल पहले लगा था। स्वामी जी द्वारा प्रारम्भ किये गये उक्त क्रान्तिकारी कार्यक्रम को अभी भी प्रत्येक कुम्भ मेले में चलाया जा रहा है।

८. हरयाणा में आर्यसमाज की छावनी के रूप में विख्यात दयानन्दमठ रोहतक के प्रधान बनाये जाने के बाद १६६६ से मासिक सत्संग का अनोखा कार्यक्रम प्रारम्भ किया तथा जीवन के अन्तिम क्षण तक बखूबी निभाया। आखिरी सत्संग ४ जून, २००६ को हुआ जो ८१ वां था। उनकी प्रेरणा से श्री सन्तराम आर्य उक्त सत्संग का संयोजन सफलता के साथ कर रहे हैं।

६. वैदिकधर्म के प्रचारार्थ स्वामी जी देश एवं विदेश में निरन्तर भ्रमण करते थे। सन् १६८३ में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह दिल्ली की तैयारी हेतु आप व स्वामी अग्निवेश जी हालैण्ड, जर्मनी, अमेरिका आदि देशों में आर्यजनों को प्रेरित करने पहुंचे। इसी तरह सन् १६६७ में स्वामी जी श्री विरजानन्द जी महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् को साथ लेकर अमेरिका गये, जहां उन्होंने अनेक शहरों में वेदप्रचार के लिए व्याख्यान दिये। उसी दौरान वे हालैण्ड आदि देशों में भी गये। वर्ष २००० में पुनः परिषद् के प्रधान श्री जगवीरसिंह को साथ लेकर पहले अमेरिका व कनाडा गये तथ बाद में हालैण्ड, जर्मनी व इंगलैण्ड भी गये। इसी वर्ष आर्यसमाज नैरोबी (केनिया) में आर्यसमाज के कार्यक्रम के लिए लगभग पन्द्रह दिन लगाकर आये। इस साल जुलाई २००६ में भी उनका कार्यक्रम अमेरिका जाने का बना हुआ था किन्तु १२ जून २००६ को उनका देहावसान हो गया। अमेरिका में उनकी प्रेरणा से एक आश्रम के निर्माण की तैयारी थी।

१०. स्वामी जी के स्वास्थ्य में निरन्तर गिरावट आने के बावजूद वे आर्यसमाज के समस्त कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी करते थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान चुने जाने पश्चात् स्वामी अग्निवेश जी को सभा मुख्यालय, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली में ले जाने का अभियान स्वामी जी महाराज के नेतृत्व में ही सम्पन्न हुआ।

११. उनकी प्रेरणा से जिन महानुभावों ने संन्यास अथवा नैष्ठिक की दीक्षा ली तथा अपने आप को सामाजिक कार्य में लगाया उनमें मुख्यतया पूज्य स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी शक्तिवेश जी, स्वामी वरुणवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी ओम्वेश जी, स्वामी क्रान्तिवेश जी, स्वामी ब्रह्मवेश, स्वामी रुद्रवेश, स्वामी कर्मपाल, स्वामी देवव्रत, स्वामी धर्ममुनि (बहादुरगढ़), स्वामी सोमवेश (उड़ीसा), स्वामी सूर्यवेश (उत्तर प्रदेश), स्वामी आनन्दवेश (शुक्रताल), स्वामी कर्मवेश (मुजफ्फरनगर), स्वामी श्रद्धानन्द (उत्तर प्रदेश), स्वामी महानन्द (शुक्रताल), स्वामी योगानन्द (मीरापुर), स्वामी महेशानन्द (बिजनौर), स्वामी धर्मवेश (अलवर), स्वामी शिवानन्द (धरारी), स्वामी प्रकाशानन्द (पिपराली), स्वामी सिंहमुनि पलवल, स्वामी सत्यवेश (जुलाना), स्वामी सत्यवेश (गाजियाबाद), स्वामी दिव्यानन्द (हरिद्वार) आदि संन्यासियों एवं श्री रामधारी शास्त्री, आचार्य जयवीर आर्य, आचार्या कलावती, जगवीर सिंह, आचार्य हरिदेव, ब्र० विनय नैष्ठिक, प्रो० विट्ठलराव (आन्ध्र प्रदेश), सुधीर कुमार शास्त्री (उड़ीसा), प्रेमपाल शास्त्री (दिल्ली), शिवराम विद्यावाचस्पति (पलवल), सन्तराम आर्य (रोहतक), ब्र० सहन्सरपाल (मु० नगर), कु० पूनम आर्या, कु० प्रवेश आर्या (रोहतक) आदि नैष्ठिकों के नाम उल्लेखनीय हैं।

१२. स्वामी जी की प्रेरणा से ही जिन महानुभावों ने राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेना शुरू किया तथा ख्याति अर्जित की उनमें सर्वश्री स्वामी अग्निवेश पूर्व शिक्षामन्त्री, स्वामी आदित्यवेश पूर्व विधयक एवं चेयरमैन एग्रो, स्वामी ओम्वेश गन्ना विकास मन्त्री उत्तर प्रदेश, प्रो० उमेदसिंह पूर्व विधायक (महम), मा० श्यामलाल पूर्व विधायक (पलवल), श्री राजेन्द्रसिंह बीसला पूर्व विधायक (बल्लभगढ़), श्री भवानी सिंह पूर्व विधायक (राजस्थान), श्री गंगाराम पूर्व विधायक (गोहाना), डॉ० महासिंह पूर्व मन्त्री (सोनीपत), श्री रोशनलाल आर्य पूर्व विधायक (यमुनानगर), चौ० वीरेन्द्रसिंह पूर्वमन्त्री (नारनौंद), चौ० टेकचन्द नैन पूर्व विधायक (नरवाना), चौ० अजीतसिंह पूर्व विधायक (बेरी) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

वर्तमान में स्वामी जी दयानन्दमठ रोहतक के प्रधान के रूप में मठ में ही रह रहे थे। उनकी सेवा में पिछले सात साल से श्री ऋषिराज शास्त्री दिन–रात साथ रहे, उनके जाने का कष्ट उन्हें भी अत्यधिक है। स्वामी जी इन दिनों पुस्तक लेखन के कार्य में लगे हुये थे। उनकी पुस्तक पुनर्जन्म मीमांसा प्रकाशित हो चुकी है। पुस्तक लेखन में श्री ऋषिराज शास्त्री, कु० प्रवेश व कु० पूनम विशेष प्रयास कर रहे थे।

स्वामी इन्द्रवेश जी ने अपने जीवन का एक–एक क्षण समाज परिवर्तन के लिए लगाया। उनके तेजस्वी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अनेक लोगों ने अपना जीवन समाज सेवा में समर्पित किया। उनकी पुण्यतिथ पर हमें एक ही संकल्प लेना चाहिए कि जिस पवित्र निष्ठा के साथ स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए अपने जीवन की आखिरी सांस तक संघर्ष किया उसी प्रकार हम सब सप्तक्रान्ति अर्थात् जातिवादमुक्त समाज, साम्प्रदायिकतामुक्त समाज, नशामुक्त समाज, पाखण्डमुक्त समाज, भ्रष्टाचारमुक्त समाज, नारी उत्पीड़नमुक्त समाज एवं शोषणमुक्त समाज की स्थापना के लिए कृतसंकल्प रहेंगे। हम आपस के सभी भेदभाव मिटाकर इस मिशन में जुटें, स्वामी जी की यही अन्तिम इच्छा थी।

– प्रधान, सार्वदेशिक सभा

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं 'राजधर्म' के स्वर्ण जयन्ती समारोह के लिए निमंत्रण एवं अपील

आर्य महानुभावों! युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना संसार का उपकार करने के लिए की थी। आर्य समाज की स्थापना को 143 वर्ष हो चुके हैं। देश–विदेश में फैले हजारों आर्य समाज की इकाईयों एवं संस्थाओं से युक्त आर्य समाज विश्वभर में वैदिक संदेश को फैलाने के लिए कृत–संकल्प है। आर्य समाज के पास धर्मोपदेशकों, भजनीकों, प्रचारकों, वानप्रस्थियों तथा संन्यासियों की एक सुदृढ़ तीव्रगामी और उत्साही मण्डली है। इसके पास मुद्राणालयों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं की सशक्त प्रेस इकाई भी है। किन्तु इतना सबकुछ होते हुए भी आर्य समाज के संगठन में निष्क्रियता एवं निराशा हम सबके लिए चिन्ता का विषय बनी हुई है। आर्य समाज में युवा पीढ़ी का प्रवेश न के बराबर है। देश में सर्वाधिक जनसंख्या युवावर्ग की होने के बावजूद आर्य समाज में युवक बहुत कम आ रहे हैं। सन् 1967 में युवकों को आर्य समाज में दीक्षित करने के लिए आर्य समाज के महान संन्यासी युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व में 'सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्' का गठन किया गया था तथा इसके शंखनाद के रूप में 'राजधर्म' नाम से पत्रिका का प्रकाशन भी शुरू किया गया था। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के आह्वान पर हजारों आर्य युवकों ने आर्य राष्ट्र निर्माण के लिए आर्य समाज में प्रवेश भी किया। परिषद् के इस प्रयास से आर्य समाज में युवक क्रांति अभियान का एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ जो आर्य समाज के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा। परिषद् की स्थापना के 50 वर्ष पूरे हो चुके हैं। इस ऐतिहासिक अवसर पर हमने निश्चय किया है कि सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् तथा राजधर्म की 'स्वर्ण जयन्ती' का समारोह भव्यता के साथ आयोजित किया जाये। इस समारोह में जहाँ पिछले 50 वर्ष की गतिविधियों एवं उपलब्धियों का लेखा–जोखा आर्य जनता के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा वहीं तेजस्वी भावी कार्यक्रम की घोषणा भी की जायेगी। समारोह में जहाँ परिषद् की गतिविधियों की शानदार चित्र प्रदर्शनी लगेगी वहीं एक डाक्यूमेंटरी फिल्म भी तैयार की जायेगी। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् आर्य समाज का एक सशक्त युवा संगठन है तथा 'राजधर्म' पत्रिका आर्य राष्ट्र निर्माण का प्रबल प्रवक्ता एवं शंखनाद है। इन दोनों के स्वर्ण जयन्ती समारोह में देशभर से हजारों युवक एवं युवतियाँ एकत्रित होकर संकल्प लेंगे तथा आर्य समाज में नई पीढ़ी को सम्मिलित करने तथा निराशा के बादलों को चीरकर सक्रियता लाने के लिए एक नया युवक क्रांति अभियान प्रारम्भ करने की घोषणा करेंगे। हमारा प्रयास है कि कम से कम 50 युवक एवु युवतियाँ इस कार्य के लिए जीवन लगाने का संकल्प लेवें। समारोह में परिषद् के समस्त विशिष्ट सहयोगियों, जीवनदानी कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों, व्यायाम शिक्षकों एवं सम्पादकों को प्रशस्ति पत्र के साथ सम्मानित किया जायेगा। किसी भी संस्था या व्यक्ति के जीवन में 50 वर्ष का समय बहुत महत्त्व रखता है। अतः इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में हम आपकी भागीदारी चाहते हैं और आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप अपने अन्य सभी आवश्यक कार्य छोड़कर समारोह में पधारें तथा इस युवक क्रांति अभियान के साक्षी बनें। यह आयोजन परिषद् के संस्थापक एवं युवाओं के प्रेरणास्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी की स्मृति में निर्मित स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला–रोहतक, हरियाणा में 9 व 10 मार्च, 2019 को भव्य तरीके से होने जा रहा है। 27 फरवरी, 2019 से चतुर्वेद [illegible] हायज्ञ प्रारम्भ होगा जिसकी पूर्णाहुति [illegible] प्रातः 9 बजे होगी। 10 मार्च, 201[illegible] ी समारोह का मुख्य आयोजन प्रातः 1[illegible] बजे तक होगा। आप सभी अभी से समारोह [illegible] आने की तैयारी शुरू कर दें और हमें अग्रिम सूचना देकर अवगत करायें कि आप कब और कितने साथियों के साथ पधार रहे हैं, ताकि आपके आवास एवं भोजन आदि की समुचित व्यवस्था की जा सके। हमें पूरा विश्वास है कि आप सपरिवार एवं दल–बल सहित पधारकर समारोह को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इस विशाल आयोजन की विविध व्यवस्थाओं पर लाखों रुपये का व्यय होगा। आप अपने सामर्थ्य एवं सुविधा अनुसार आर्थिक सहयोग देकर हमारा उत्साह बढ़ायेंगे। इस आशा और विश्वास के साथ निवेदन है कि आप अपना सहयोग 'स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन' के नाम से चैक/बैंक ड्राफ्ट/नकद देकर कर सकते हैं।

निवेदक

स्वामी आर्यवेश
प्रधान

बिरजानन्द
महामंत्री

स्वर्ण जयन्ती समारोह

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

9416630916, 9354840454, 9468165946

The Heritage of Swami Dayanand Saraswati

- B. R. Sharma Vibhakar

Swami Dayanand Saraswati was born in Tankara of Maurvi State in Saurashtra province. On Falgun Badi Dasmi every year his birthday is celebrated with great zeal. On falgun badi chaudas or the day of shiva Ratri is regarded as a day of 'Rishi Bodhotsva'. As a teenager his soul got illumined. An idea struck in his mind that there must be some other Shiva except this one made of stone, who utterly failed to defend himself from the mischief of a mouse to pollute the pindi of Shiva and stale the offerings. Look at the Vishtha and urine of the mouse making it dirty!

Actually, there was a custom (still rampant) in those days that everyone might be on fast and awoke throughout the night known as the Shiva Ratri. Mool Shankar (Swami Dayanand's earlier name) kept on awaking and watching the Shiva-Ling. He found there was no activity of Shiva-Ling, it was just in an actionless posture. It was dead sure that it was lifeless. Mool Shankar came to this conclusion that it was not a real and living Shiva. It is a fallacy, a wrong notion, a blind concept. So damn this artificial Shiva! He was certainly illumined by projecting arguments and the lagic in his mind and he started to quest and question as to where the Real Shiva was! An idea of detachment overpowered his mind.

When his father Sh. Kishan saw Mool Shankar's tendency of detachment and renunciation, he wanted to get him enchained with marriage. But one, who is a searcher for the Truth, could be enchained so? On one night he left his house when he sensed his bondage. He met many hinderances but continued to pass over them to have an horizon of Knowledge. He met many scholars and saints and discussed many questions and secrets of yoga. He went to a renowned Sanyasi named Swami Poornanand Saraswati who gave him a name of Swami Dayanand Saraswati. Now he was Swami Dayanand Saraswati to be addressed. He studied the Vedic Literature which stands by the logical appreciation. He kept aside all that was intermixed. He was widely studied person. Some body suggested him to see and get guidance from a blind Sanyasi named Virjanand Swami, who was known as the bright and illumined 'Sun of Sanskrit Grammar', in Mathura city.

When Swami Dayanand a young sanyasi of sterdy body and logical brain knocked the door of Virjanand Swami, a voice came from inside with a question 'Who is there?' Swami Dayanand instantly replied, 'I have come to know sir this one as to who am I? In search of myself' I have come into your wisdom's light. The great Guru was astonished and sparkled and murmurred- 'Oh! welcome! I was really in search of such an appropriate pupil who could learn something important from me. So I am utterly pleased to have you, dear. What a fine, perfect and unparalled meeting between the Acharya and would be pupil it was!

Swami Dayanand started learning from Guru Deo Swami Virjanand Saraswati and enriched himself under his guidance. He was most dear to Acharya because of his unique calibre. He proved himself to be the truest and most failthful. He turned to the real path leading to the Real Shiva. He wrote many books and the Satyartha Prakash was one of them to declare its uniqueness with a commanding tone. Its every approach is everlasting and unbeaten. Nobody can challenge its contents. He in times of British yoke brought about the light and enthusiasm to show the path of independence to Indians and he produced many youngsters to fight the case of freedom. All the movements were imbibed with the essentials of his philosophy. Swedeshi Andolan is his product which lator on Gandhi Ji adopted. He taught us to be free without any bondage. Rana De was his first disciple.

He wrote many books in Hindi language as he declared at first that Dev Nagri (Hindi) will be the National language of Bharatvarsh.

He gave us all the perspectives of Vedic Religion and founded Arya Samaj, a body of logic and devotion. It was more helpful in achieving freedom. Having a national character there was a flood of establishing many Arya Samaj Mandirs almost in every town and city in the country and abroad. Through discussions held with other sects and matavalambis a norm of Vedic religion was set-up. They contain the glorious chapters of victories.

As a matter of fact, we have got this Maharshi Dayanand's vision which is regarded as the real heritage making a dialogue of our Vedic culture. He declared firmly 'Return to the Vedas'.

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 1 का शेष

मगध प्रमण्डलीय आर्य सभा एवं आर्य समाज मानपुर (गया) बिहार के संयुक्त तत्वावधान में दक्षिण बिहार आर्य महासम्मेलन भव्यता के साथ सम्पन्न

बिहार की विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारी एवं प्रतिनिधियों ने महासम्मेलन में बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। स्वामी आर्यवेश जी ने प्रेस वार्ता को सम्बोधित करते हुए इस अवसर पर कहा कि गया पिण्डदान एवं श्राद्ध आदि कथिक कर्मकाण्डों के लिए विख्यात है, किन्तु आर्य समाज इन अवैदिक मान्यताओं को सही नहीं मानता। अतः इस आर्य महासम्मेलन का मानपुर, गया में आयोजित होना विशेष महत्व रखता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने हरिद्वार में पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी। अब यह आवश्यक हो गया है कि पाखण्ड और अन्धविश्वास के विरुद्ध पूरे देश में प्रचण्ड अभियान प्रारम्भ किया जाना चाहिए। आर्य समाज के सिवाय इस दिशा में और किसी संगठन से यह आशा नहीं की जा सकती कि वह इस कार्य को कर सकेंगे। स्वामी जी ने बिहार राज्य के आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि संगठित होकर पाखण्ड के विरुद्ध जोरदार अभियान चलायें। स्वामी आर्यवेश जी ने सभी आर्यों को संगठित होने की भी अपील की।

इस आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. बच्चू लाल आर्य ने घोषणा करते हुए कहा कि मगध प्रमण्डलीय आर्य सभा और आर्य समाज मानपुर, गया के तत्वावधान में आयोजित इस आर्य महासम्मेलन के माध्यम से वे वेद प्रचार एवं पाखण्ड विरोधी अभियान की ठोस योजना तैयार करेंगे और समाज के प्रतिष्ठित लोगों से इसके साथ जोड़ने का प्रयास करेंगे।

श्री संजय सत्यार्थी ने अपने ओजस्वी उद्‌बोधन में स्पष्ट किया कि बिहार राज्य में चन्द लोगों को छोड़कर अधिकतर आर्य समाजें उनकी सभा के साथ सम्बद्ध है और वे मिलजुलकर पूरे प्रान्त में आर्य समाज का एक तेजस्वी स्वरूप तैयार करेंगे। शीघ्र ही वे प्रान्त भर में धार्मिक पाखण्ड एवं अन्धविश्वास के विरुद्ध जन चेतना यात्राएं भी निकालने की योजनाएं तैयार करेंगे। आर्य महासम्मेलन की व्यवस्था में आर्य समाज मानपुर के मंत्री श्री जय प्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष श्री उपेन्द्र कुमार आर्य, श्री अशोक कुमार देसाई, श्री सत्येन्द्र कुमार, श्री विनोद कुमार पण्डित, डॉ. अशोक कुमार आर्य, श्री सुजीत सिंह, श्री जगदीश सिंह, श्री हरिशंकर आर्य, श्री पी.के. मोहन, श्रीमती शीला आर्या, श्रीमती दुर्गेश नन्दिनी, श्रीमती किरण आर्या, श्री सत्यव्रत आर्य, मधुबाला आर्या आदि का विशेष सहयोग रहा।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के 'स्वर्ण जयन्ती समारोह' में बिहार से भाग लेंगे युवा – रामानन्द आर्य

इस अवसर पर स्वामी जी से भेंट करके श्री रामानन्द आर्य ने विश्वास दिलाया कि बिहार से उत्साही युवक सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के 9–10 मार्च, 2019 को होने वाले 'स्वर्ण जयन्ती समारोह' रोहतक में पहुँचेंगे।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।